RAM BHAVAN

---आप कहाँ से हैं?---

हम जिला बस्ती, तहसील खलीलाबाद, थाना-दोनघाट ग्राम-खसिन के निवासी हैं। शुरु से, मतलब, हम गृहस्थी, खेतीबाड़ी करते आए। शादी होने के बाद, जब शादी हुई तो कुछ दिन हम गाँव में खेतीबाड़ी किए। खेतीबाड़ी करने के बाद थोड़ी सी दिल में चाहत आई कि चलो दिल्ली घूमके आते हैं। दिल्ली जब आए तो कुछ दिन मतलब हमने एक फैक्ट्री में काम करा। इसके बाद हमने पालिश का काम शुरु करा। पालिश के काम सीखने के बाद हमने फिर कुछ अपना ही करना सोच लिया। मैंने सोचा कि अपने ही जिन्दगी से कुछ करें तो कुछ दिन के बाद-करते-करते एक साथ, हम भाई पाँच हैं, औ पाँचों अपना-अपना धन्धा ही करते हैं।

---आप घर पर कुछ पढ़ाई-लिखाई नहीं किए----

पढ़ाई-लिखाई तो हमने पाँच तक करा।

---पाँच तक----

हाँ, पाँच तक पढ़े हैं।

---शादी कब हुई---

शादी हुई हमारी करीब, समझ लो, सन् याद नहीं आ रहा है, पचहत्तर-छिहत्तर में

तो हम दिल्ली आ गए, सोच लो कि 17-18 साल के पहले की बात है। इसी मे मतलब हमने शादी करी। फिर जब दिल्ली आ गए, दिल्ली में अपना घर संवार लिए तो भाई से हमारी थोड़ी तू-तू मैं-मैं.. हो गई। तू-तू मैं-मैं हुई जब, फिर अपना हमने इधर आ गए मीठापुर एरिया, बदरपुर क्षेत्र मे। बदरपुर क्षेत्र मे जब आए तब हमने अपना प्लॉट खरीदा

माहौल बहुत बढ़िया है, कुछ ऐसी बात नहीं है, हमारे गाँव का माहौल ठीक है। शुरु से ~~हमने~~ 12 साल ब्रह्मचारी वाली वो थी भावना, हमने अखाड़े मे कुश्ती लड़ा। मतलब 18 साल में मेरा गौना आया था। अठारह साल के बाद एक लड़की हुई। लड़की जब हुई तब हमने, तब दो-तीन साल के बाद हम दिल्ली आ गए। दिल्ली आके हम यहाँ रहने लगे।

--- ज़िन्दगी में आपको कभी खुशी भी मिली है, कभी ग़म भी मिला है.. —.

ऐसा है. ग़म-खुशी तो हमेशा हमारे पास रहता है, चाहे ग़म भी हो या खुशी भी हो, तो हम हमेशा एक ही जैसा रहते हैं। शाम को दारु पी लेना, रात में सो गए. सुबेरे उठे तो अपना, अपने धन्धे में लग गए। इसमें क्या हुआ--
हा-- हा-- हा-- -- हा-- --

हाँ बच्चे भी हमारे से खुश हैं। बच्चों को भी पढ़ा-लिखा रहे हैं, अपने को भी मौज से हैं।

गाँव साल में कितनी बार जाते हैं?

गाँव में एक साल में एक बार आता हूँ। जब शादी-ब्याह पड़ता है, मतलब कोई घर बनाना है, कुछ-कुछ करना है, इसलिए घर जाते हैं।

--- अच्छा, अभी जो कमा रहे हैं आप, क्या घर भी देना होता है? - - -

हाँ, हम जो कमाते हैं, एक हजार रुपया घर देना होता है।

--- मम्मी-पापा हैं - - - —

~~हाँ, मम्मी हैं, मम्मा खत्म हो गए हैं।~~
पापा हैं, मम्मी खत्म हो गई।

--- आपके घर में और भाई हैं - - - -

दो भाई हैं अभी हमारे गाँव में। एक भाई बंगाल में रहते, एक भाई दिल्ली में ही रहते हैं और हम यहाँ हैं।

--- आप जब से यहाँ, इस क्षेत्र में आए हैं, पोलिटिकली ~~क्या~~ इन्वोल्व हुए हैं कभी - - -

ऐसा है, उस समय तक कुछ भी नहीं था इस एरिया में जब हम इधर आए। डरते थे लोग, कि कोई हमें लूट न ले। लोग डरते थे कि अगर इधर पैसा फँसाएँगे तो कोई हमें लूट न ले। कोई मार पीट कर भगा न दे। उस समय ऐसा माहौल था, इसलिए कोई आता नहीं था इधर जल्दी। ~~इसलिए~~ ये तो आदे बसापत

होने लगी है करीब 97-98 में शुरुआत हो गई। वह से इधर, क्योंकि वह से हमारी ये कालोनी बनी हुई है। इसलिए, हमें ज्यादे महसूस- मालूम है कि वह से ज्यादे बरसात होने लगी है। यही हालत हो रही है. कि आजकल एक नई कहानी चल रही है- नई कहानी बताऊँ?

---- बताइए - -

ये... का नाम है कि बिजली की चक्की जो चल रहा है। क्योंकि बिजली है-- ये.. हमारे यहाँ के विधायक राम सिंह जी हैं ये चार-पाँच जने मिलके ठेका लिये हैं और पैसा बहुत ज्यादे ले रहे - एक घर से बत्तीस सौ रुपया ले रहे हैं। उसकी लड़ाई हम लोग रहे हैं। मतलब वे सोमवार तक के टाइम ले रखे हैं। देखो अब क्या होता है।

--- आपको उम्मीद लग रहा है कि आपकी जीत -- ?

~~~~

देखो अपनी कोशिश चल रही है ताकि जीत जाय तो बढ़िया ही होगा, जनता की भलाई हो जाएगी।

-- कभी ऐसा हुआ है -- कभी लेबर स्ट्राइक हुआ हो। आपलोग उसमें इन्वोल्व हुए हों। -

लेबर स्ट्राइक नहीं हुआ है मतलब ये है कि जैसे प्रधान वगैरह का चुनाव होता है तो उसमें लफड़ा वगैरह होता है। इसी लोगों से होता है. वैसे कोई ऐसी लफड़ा नहीं होता है-

----- अच्छा एक चीज पूछना चाहूँगा - -. 88 ई- में दिल्ली में लेबर स्ट्राइक हुआ था- इसके बारे में कुछ बताएँगे आप. - - - -

[illegible] पर हुआ था. [illegible]
~~~~

अच्छा ये क्या नाम है, 84 में कौन थे प्रधान मंत्री, उसी जब ये स्कूली बच्चों से हुआ था। एक दो बच्चे मरे थे जल के।

- - - क्यों बच्चे लोग क्या किये थे ? - - - -
ऐसे किये थे न जो - - क्या बोलते हैं; जो बच्चों पर जातपात का फूट नहीं दिए ये क्या बोलते हैं - -
- - आरक्षण - - - -
हाँ आरक्षण। आरक्षण के बारे में बच्चों के आरक्षण के लिए वो लड़ाई कर रहे थे अपनी।
वर्कर तो दिल्ली में ओखला के अन्दर स्ट्राइक किए थे। 80में किए थे।

- - 80ई में - - -
हाँ जी। अच्छा ये वर्कर को मालिक ने बाथरूम में बन्द कर दिया था। मरा हुआ समझकर। तो शाम में 8-9 बजे तक देखे तो वर्कर है ही नहीं, आया ही नहीं अभी तक। फिर उसके बाद वो सुबह जब हुए, तो वर्कर जब नौकरी आए कम्पनी में। देख रहे ताला बन्द बाथरूम में। बाथरूम के ताला तोड़े तो उसको देख रहे कि आदमी मरा हुआ दिख रहा है। साँसें चल रही हैं उसकी। उसके बाद निकाले उसको। निकालने के बाद क्या हुआ कि- फिर मालिक आया, मालिक को वैसे ही नंगा कर दिया सब। पहले तो गाड़ी में फूक दिए। मार के मालिक को भी नंगा किए। मालिक को नंगा करके फिर वैसे बाथरूम में बन्द कर दिए। उसके बाद तीन-चार दिन तक पूरी ओखला में स्ट्राइक चलती रही। कोई न मालिक आता था न मालिक आने देते थे। कम्पनी तोड़-फोड़ बहुत किए थे।
गवर्नमेंट की तरफ से कोई कारवाई नहीं की गई थी।

- - - इसके बाद हालत कितने दिन के बाद ठीक हुई थी? --

हालत करीब ~~तीन~~ चार दिन के बाद सुधार पर आई थी। मतलब तीन दिन तक तो कम्पनी में ताला ही लगा रहा। अउआ कम्पनी में तो आग ही लगा दी थी। इसके बाद फिर सही चला। फिर 84 ई में इन्दिरा गाँधी मर गई। तो उसमें भी बहुत जनता मारी गई। हाँ मुझे तो अच्छा ही लग रहा है अब यहाँ से रोटी-पानी खाने को मिल रहा तो अच्छा ही लग रहा है दिन में रेस्ट कर रहे हैं खा रहे तो अच्छा लग रहा है

- - - बच्चे को पढ़ाने के तरफ आपकी कोशिश ---

बच्चे को पढ़ाने के तरफ तो बहुत कोशिश कर रहा हूँ। देखो कहाँ तक क्या कर पाते हैं। बच्चे पढ़ेंगे कि क्या करेंगे, उनके ऊपर है। कुछ मेहनत मैं भी कर रहा हूँ कि वह पढ़े।

- - - किस स्कूल में दिए हैं? - —

ये प्राइमरी स्कूल है सरकारी।

- - - यहीं आस-पास में - - - -

हाँ जैतपुर में। मीठापुर पड़ता है

- - आप क्या सोचते हैं पढ़ाकर कुछ बना देता है- -.

हम तो यही सोचते हैं कि पढ़कर कोई काम सीख आये तो सही रहेगा। उनकी भी रोजी-रोटी चल जाएगी।

- - - आप यहाँ कौन-कौन सा पर्व मनाते हैं? - -

हम तो यहाँ दीपावली मनाते हैं, [illegible]

उसी तरह हम भी मनाते हैं- जैसे होली हुआ।

- - - आप खाली वक्त में क्या करते हैं? - - -

अब खाली मिलता है तो अपना बैठ गए या चले गए कहीं घूमने। कुछ बना कर ही खा रहे हैं। कभी-कभार मिल जाता है तो बीवी-बच्चों को साथ लेकर घूमते रहते हैं। कभी कहीं से घूम आए तो कभी कहीं से।

- - - कभी ऐसा नहीं हुआ बीवी के साथ घूम रहे - -

ऐसा है हमारे लिए वह समय नहीं आया कि हम अकेला घूम पाए। क्योंकि शुरू से हमारे पास बच्चे ही हैं। अब अकेला घूमने के लिए कोशिश करूँ बच्चे साथ में ही लग जाते हैं।

- - - जब बच्चे नहीं थे तब कहाँ-कहाँ घूमते थे?

जब बच्चे नहीं थे तब गाँव में रहे। गाँव में तो मतलब कहाँ जाना- किसी रिश्तेदारी में जाना होता था तो चले घूम आए। यही होता था पहले।

- - - आजतक कभी बीवी के साथ सिनेमा गए हैं - -

ऐसा है सिनेमा का - अब घर में टी.वी. ही नहीं देख ~~सक~~ पाते हैं तो सिनेमा कहाँ से देखेंगे। दिनभर खाए-पिए, खुश रहे। और क्या ज़िन्दगी में है।

- - - आप अपनी जिन्दगी से बहुत खुश हैं - - -

हाँ, हम अपनी जिन्दगी से बहुत खुश रहते हैं।

हम हमेशा खुश रहते हैं, चाहे जेब में पैसा हो या नहीं। जब भी हम खुश रहते हैं हमारे दिल में ये बात नहीं आती कि हम नाखुश रहें। चाहे जेब में रहे पैसा, घर में जब भी खाने के पैसे नहीं जब भी हम खुश रहते हैं। हमारे अन्दर दुःख की बात नहीं है। कहते हैं, जब मेहनत कर रहे हैं तो शाम को खाने को देगा ही देगा कहीं चैन करो. तो रोना या हँसना की क्या बात है। इस तरह रहो कि खुशी रहो हमेशा। चाहे कभी लेके रहो या देके रहो, वह तो चलता ही रहता है।

- - - - आपस में कभी झगड़ा नहीं होता है? - - -

आपस में थोड़ा देर के लिए होता है। सुबह में कुछ हुआ तो शाम में एकता होना ही होना है।

- - - आप अपने काम के बारे में बताएँ - -

देखो जी, ये पालिश का अड्डा है। इसपे पॉलिश का सारा काम होता है, पीतल का भी काम होता है। लोहा आता है, स्टील आता है। बर्तन में सारा बर्तन आता है। इसे हम चमका देते हैं।

- - - - क्या मशीन आपकी अपनी है? - - -

हाँ मशीन हमारी है

- - - कम्पनी का रेट - - - -

कम्पनी जो रेट देती है. वह पाँच रुपये से लेकर पचास रुपये तक है। इसी में हम अपना दिनभर मेहनत करते हैं तो ~~ये~~ हो आता है।

खाने पीने लायक ही आता है [illegible]

... आप अपनी जिन्दगी के बारे में बताइए- - - -

मेरा जीवन बहुत सही है जैसे-जैसे रहे वैसे सही है मैं हमेशा ठीक रही, खराब तो कभी नहीं रही। जो परेशानी दुनिया को है वही हमारे को भी है।

-- आपकी शादी कब हुई? - - - -

शादी की तो हमें पता नहीं भाई। बहुत छोटी थी शादी मैं। गोदी में लेके शादी करे और माँ-बाप मालूम नहीं कैसे शादी करी। हम कुछ नहीं पढ़े-लिखे हैं। स्कूल बहुत दूर था इसलिए माँ-बाप कहीं भेजते नहीं थे। अच्छा घर द्वार था, अच्छी खेती बारी थी, हम दूसरों से काम करवाते थे मेरे दो भाई हैं। तीन बहन हैं गाँव में दोनों भाई पढ रहे और हम दोनों बहनें ससुराल चले गए। छोटी वाली का गौना होने वाला है। इतना मालूम था कि हमारी शादी हो गई। जब मेरी माँ अपनी माँग में सिन्दूर लगाती थी तो मैं कहती थी मेरी भी लगाओ, बच्चे में का मालूम वो लगा देती थी।

--- आप दिल्ली कब आईं? - - - -

दिल्ली मैं- - हो गई दस साल हो गई- ग्यारहवाँ साल हो गई।

- - - कैसा लग रहा है? - - -

ठीक ही है जैसे दुःख-सुख काट रही, सब सही है

और कभी खुश रहते कभी नाराज़ रहते। उसमें तो हर समय होता ही रहता है। जहाँ चार बर्तन हैं वहाँ ठोकर तो लगता ही रहता है।

--- कहीं घुमाने के लिए ले जाते हैं? - ~

नहीं, कहीं नहीं। कहीं नहीं लेके जाते हैं।

- ~ आपका पड़ोसी सब कैसा है? - ~

सब आस-पड़ोस सब सही है। हमारे लिए सब सही है। अच्छा बोल रहा है, अच्छा बैठ रहे हैं। हमें भी अच्छा लग रहा है।

— आप क्या-क्या काम करती हैं? - .

हम तो बस वही रोटी बनाते, खिलाते जाते हैं। इसके अलावे बच्चों की देखभाल करते हैं।

-- आपको आगे क्या करने का उद्देश्य है? - ~

हम तो यही चाहते हैं कि बच्चे पढ़-लिखें, घरद्वार बना लें। ऐसे यहाँ भी रहें, गाँव में भी रहें। गाँव में हमारी खेती-बारी, घर-द्वार है यहाँ भी जो है कर रहे हैं।

--- आपके माँ-बाप मानती हैं: -- - -

मानते तो हैं ही, अब पाँच भाई-बहन हैं, सबको मानते हैं।

--- आपका कोई सपना - - -

सही सलामत रहें हमलोग भी - - जब बच्चे सही से रहेंगे तो हम भी सही से रहेंगे। जब बच्चे दुःखी रहेंगे तो माँ-बाप कहाँ से सुखी रहेंगे। इतनी मिल ही गई है, थोड़ा बहुत और मिल जाय तो और अच्छा है। बाद में समय हमलोग घर रहने लगेंगे, बच्चे यहाँ रहेंगे।